एक अन्तिम बात
(28:11-31)

यदि किसी पुस्तक ने कभी शृंखला के लिए पुकार की हो, तो वह प्रेरितों के काम की पुस्तक ही है। पौलुस जब इफिसुस में था, तो उसने कहा, ''... मुझे रोम को भी देखना अवश्य है'' (प्रेरितों 19:21ख)। जब उसने रोम के मसीही लोगों के नाम पत्र लिखा, तो स्पेन जाने की बात करते हुए फिर कहा, ''क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूं, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुंचा दो'' (रोमियों 15:24)। पौलुस जब यरूशलेम में गिरफ्तार हुआ, तो यीशु ने उसे आश्वासन दिया, ''ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी'' (प्रेरितों 23:11ख)। रोम की तूफ़ानी जलयात्रा में, एक स्वर्गदूत ने उसे बताया: ''हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है'' (27:24क)।

पुस्तक के इस भाग, अर्थात प्रेरितों 28:11-31 में, हम पौलुस को देखेंगे कि अन्ततः वह राजा के नगर में पहुंच ही गया। हम हैरान होते रहे हैं कि पौलुस द्वारा कैसर के साम्हने अपना उत्तर देने पर क्या हुआ होगा। क्या उसे दण्ड मिला था या छोड़ दिया गया था? क्या सुसमाचार को स्पेन में ले जाने की अपनी योजनाओं को वह पूरा कर पाया? परन्तु, लूका ने, इन शब्दों के साथ पुस्तक लिखनी बन्द कर दी: ''और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा'' (28:30, 31)।[1] हम में से जिन लोगों को पौलुस की कहानी का आनन्द आने लगा था, उनके लिए यह अन्त निराशाजनक है।

इस पुस्तक का ''नीरस'' अन्त एक शृंखला के बारे में अनुमान लगाने के लिए बाध्य करता है। क्या लूका एक ऐसी शृंखला लिखना चाहता था जो उसने पहले कभी न लिखी हो? क्या उसने एक ऐसी शृंखला लिखी जो खो चुकी है? इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि लूका ने तीसरी पुस्तक लिखने की इच्छा की हो। लूका ने पवित्र आत्मा की अगुआई में ढंग से प्रेरितों के काम की पुस्तक की समाप्ति ऐसे क्यों और कब की? लूका का मुख्य उद्देश्य पौलुस की जीवनी लिखना नहीं, बल्कि यह बताना था कि सुसमाचार कैसे रोम में पहुंचा और फैला। इस उद्देश्य को मन में रखें, तो हमें यह अन्त निराशाजनक नहीं बल्कि विजय घोष लगेगा! हर बाधा के बावजूद, परमेश्वर ने अपने

उद्देश्य को पूरा किया!

अन्तिम आयतों में मुख्य शब्द ''बिना रोक टोक'' है; ''और वह [पौलुस] पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और *बिना रोक टोक* निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार कर प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा।'' मूल शास्त्र में, ज़ोर देने के लिए इस शब्द को आयत के अन्त में रखा गया है, NASB के अनुवाद में भी इसे अन्त में वहीं रखा गया है। इस विशाल साम्राज्य के प्रमुख स्थान में, सुसमाचार का प्रचार बिना रोक टोक उन्हीं लोगों में हुआ जो इसे दबाना चाहते थे अर्थात रोमी अधिकारियों, यहूदी अगुओं और शैतान की *बिना रोक टोक सुसमाचार का प्रचार हुआ*। यीशु का शुभ समाचार राजधानी से लेकर राज्य के दूर-दूर तक के क्षेत्रों में पहुंच गया! आप 30 और 31 आयतों को वैसे ही पढ़ें जैसे लूका ने लिखा अर्थात उन्हें मन से आनन्दित होकर!

''अन्तिम बात'' मूलत: ''बिना रोक टोक'' है, इसलिए आइए इस पाठ में उस *सब पर* नज़र डालें जो परमेश्वर द्वारा प्रत्येक नकारात्मक को सकारात्मक में बदलने के बाद 11 से 31 आयतों में बिना किसी रोक टोक के जारी रहा।

यात्रा के बारे में एक अन्तिम बात (28:11-16)

देरी की रुकावट के बिना (आयत 11)

पौलुस और उसके साथियों ने मिलेतुस में तीन महीने (आयत 11क), शायद नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी का समय बिताया। हम नहीं जानते कि परमेश्वर पौलुस को तीन महीने तक टापू में क्यों रखना चाहता था। क्या यह समय पौलुस के लिए आराम करने या हानि से मुक्त होने का था? क्या यह अपनी उन कुशलताओं की धार को तेज करने का समय था जिन्हें कैसरिया में इस प्रेरित के दो वर्ष की रुकावट के दौरान जंग लग गया था? क्या परमेश्वर उस टापू के लोगों को मसीही बनने का अवसर देना चाहता था? परमेश्वर का उद्देश्य कुछ भी हो, पौलुस ने उस देरी का उत्तर बड़ी शालीनता से दिया जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था।

अन्धविश्वास की बाधा के बिना (आयत 11)

जाड़े के महीनों में, रोमी सूबेदार यूलियुस ने जिसके ऊपर पौलुस और अन्य कैदियों को रोम ले जाने की जिम्मेदारी थी, सिकन्दरिया के एक और जहाज़ पर जगह आरक्षित कर ली थी (27:6; 28:11)। यह जहाज़ सर्दियों में टापू के उत्तर-पश्चिमी तट पर भूमध्यसागर की एक प्रमुख बन्दरगाह, सम्भवत: वेलेटा पर रहा था।

सर्दी के कारण जहाज़ के रुकने से उनको अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंचने के लिए तीन या चार दिन और लग जाने थे, इसलिए उसका स्वामी इस यात्रा को जल्दी से जल्दी पूरा करना चाहता था। मौका मिलते ही, जहाज़ को फिर से चला दिया गया।[2]

उस जहाज़ के बारे में, लूका ने एक विशेष टिप्पणी जोड़ी: ''और जिसका चिह्न दियुसकूरी था'' (आयत 11ख)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''दियुसकूरी'' का अर्थ है ''ज्यूस के पुत्र।'' यूनानी-रोमी मिथिहास के अनुसार, कैस्टर और पौलुक्स (देखिए KJV) ज्यूस (जुपिटर) के जुड़वां पुत्र थे।[3] इन दोनों भाइयों को नाविकों के संरक्षक देवता माना जाता था।[4] सिकन्दरिया के जहाज के अग्रभाग पर इन जुड़वां भाइयों का नाम उकेरकर रंग किया गया था।

लूका की इस टिप्पणी से यह प्रमाणित होता है कि वह वहीं था;[5] जिससे उसके एक प्रत्यक्ष गवाह के रूप में होने से उसकी बात की पुष्टि हो जाती है। यह उस अन्धविश्वास का संकेत भी है जिसका सामना पहली शताब्दी के (और संसार में आज के बहुत से) सुसमाचार प्रचारकों को करना पड़ा। एक बात तो पक्की थी कि सिकन्दरिया के पिछले जहाज के यात्रियों के लिए तथाकथित समुद्री देवताओं ने कुछ नहीं किया था! उनके प्राण उस एक *सच्चे* परमेश्वर के हाथ में थे, जो ''एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं'' (1 कुरिन्थियों 8:6क; प्रेरितों 27:24 भी देखिए)।

मौसम की रुकावट के बिना (आयत 12, 13)

यात्रा के आरम्भिक भाग में, विपरीत हवाएं बाधा बनी हुई थीं (प्रेरितों 27:4)। अब, बिना किसी बड़ी कठिनाई के जहाज़ अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा था। जहाज पहले सिसिली की राजधानी सुरकूसा तक उत्तर-पूर्व की ओर साठ मील तक गया।[6] लूका ने बताया: ''सुरकूसा में लंगर डाल कर हम तीन दिन टिके रहे'' (28:12)। जिन लोगों पर जहाज़ की ज़िम्मेदारी थी शायद उन्हें कार्य का प्रबन्ध करते हुए तीन दिन लग गए, परन्तु सम्भवत: वे मसीना के तंग जलमार्ग से आगे बढ़ने से पहले अनुकूल हवा की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह तंग जलमार्ग ख़तरनाक ज्वार भाटों और भंवरों के लिए प्रसिद्ध था।[7] उन्हें चौबीस घण्टों में अगली बन्दरगाह तक पहुंचने के लिए सत्तर मील तक बहाकर ले जाने वाली हवा चाहिए थी।

आखिर वे सुरकूसा से बाहर निकलने में सफल हो गए। ''वहां से हम घूमकर[8] रेगियुम में आए'' (आयत 13क), जो इटली की पादस्थली में थी। रेगियुम से, वे उत्तर की ओर दो सौ मील दूर व्यापारिक बन्दरगाह पुतियुली पर पहुंचे। ''एक दिन बाद दक्खिनी हवा चली'' (आयत 13ख), जिससे वे अपनी यात्रा को जारी रख सके। इटली के पश्चिमी तट के साथ-साथ समुद्र में जाते हुए, वे ''इसके दक्षिण पोम्पेई नगर के धुएं के पहाड़ (वेसूवियेनाइट) को पार करके'' बाहर निकले होंगे।[9] ''दूसरे दिन [वे] पुतियुली में आए'' (आयत 13ग)।

पुतियुली, जो नेपलिस की खाड़ी में स्थित था, रोम की प्रमुख बन्दरगाह थी। पौलुस और बाकी लोग इस व्यस्त बन्दरगाह पर उतर गए और उन्होंने रोम तक पचहत्तर मील पैदल जाना था।

भय की रोक टोक के बिना (आयतें 14, 15)

क्या आप कभी किसी ऐसी जगह पर गए हैं जहां जाने की आपकी बड़ी इच्छा थी और फिर गन्तव्य स्थान के निकट पहुंचने पर आप भयभीत हो गए हों? पुतियुली की बन्दरगाह पर खड़ा, पौलुस चिन्ता में डूबा हुआ था (आयत 15 के अन्त में देखिए)। उत्तर में रोम की शक्ति के प्रतीक युद्धपोत खड़े थे। पास ही धनी लोगों की नौकाएं थीं, जो रोम के भौतिकवाद का प्रतीक थीं। इन सांसारिक चुनौतियों के अलावा उसे इस बात की भी चिन्ता होगी कि वह तो रोम में एक कैदी के रूप में जाएगा, फिर वहां के भाई उसे स्वीकार कैसे करेंगे।[10]

परमेश्वर एक बार फिर, ''दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर'' (2 कुरिन्थियों 1:3ख) सिद्ध हुआ। पौलुस को पुतियुली में कुछ ''भाइयों'' (आयत 14क) से मिलकर सुखद आश्चर्य हुआ। स्पष्टत: सुसमाचार का प्रचार रोम से लेकर बन्दरगाह नगर तक हो चुका था। भाइयों ने पौलुस और उसके साथियों को ''उनके यहां सात दिन तक'' रहने का निमन्त्रण दिया (आयत 14ख)। शायद पौलुस सोमवार को वहां पहुंचा और मसीही लोगों ने चाहा कि अगले रविवार रोटी तोड़ने के लिए वह उनके साथ रहे।[11] कुछ भी हो, पूरे सप्ताह में प्रभु का एक दिन आना था, जब पौलुस उस सारे क्षेत्र के भाइयों के साथ संगति का आनन्द ले सकता था। सैदा की तरह (27:3), सूबेदार ने पौलुस को अपने मित्रों के साथ जाने की अनुमति दे दी।

रोम के इतना निकट होने के बावजूद रोमी सूबेदार, यूलियुस द्वारा अपनी यात्रा एक सप्ताह तक आगे बढ़ाने की अनुमति देना एक रहस्य है। क्या वहां उसे कोई काम था? क्या उसने अपनी फौजी टुकड़ी को फिर से तैयार करना था क्योंकि तूफ़ान में उनका सब कुछ खो गया था? क्या वह रोम से कोई आदेश मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था? इनमें से किसी भी सम्भावना में सात दिन तक ठहरने की व्याख्या नहीं मिलेगी। उसने सम्भवत: पौलुस के साथ व्यक्तिगत सहानुभूति के कारण एक सप्ताह तक रुकने के लिए सहमति दे दी। निश्चय ही वह इस प्रेरित से प्रभावित था। सम्भवत:, वह सुसमाचार से भी प्रभावित हुआ था और मसीही बन गया था।[12]

पुतियुली में सात दिनों के दौरान, रोम के मसीहियों को पता चला कि पौलुस आया है। उसी समय, कुछ लोग उससे मिलने आए (आयत 15)। रोमियों की पत्री के अन्तिम अध्याय में, पौलुस ने रोम में छब्बीस मित्रों के नाम दिए; वे मित्र सम्भवत: दक्षिण की ओर जाने वाले उन दो दलों में से थे।

बन्दरगाह नगर में एक सप्ताह रुकने के बाद, पौलुस और अधिकारी अप्पियन मार्ग से, जो रोमी सड़कों में सबसे प्रसिद्ध था, उत्तर की ओर चल पड़े।[13] आधी यात्रा पूरी कर लेने के बाद, उन्हें एक स्वागतकर्त्ता कमेटी मिली। लूका ने लिखा, ''वहां [रोम] से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक[14] और तीन-सराय[15] तक हमारी भेंट करने को निकल आए'' (आयत 15क)। अप्पियुस मार्ग पर यात्रियों के लिए विश्रामस्थल बनाए गए थे, और इन स्थलों के आस-पास कई व्यापारिक संस्थान विकसित हो गए थे। एक विश्रामस्थल अप्पियुस का चौक था जो रोम से तैंतालीस मील दूर था। एक और स्थान,

तीन सराय नाम से था जहां से राजधानी नगर दस मील दूर था।[16]

आयत 15 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''भेंट'' ''किसी आने वाले उच्चाधिकारी के आधिकारिक स्वागत, जो [पौलुस को] लेने और उसकी यात्रा के अन्त में और उसके मार्गरक्षण के लिए नगर से बाहर गया था, के लिए लगभग तकनीकी शब्द था।''[17] एक नायक की तरह स्वागत होने पर पौलुस का भय समाप्त हो गया था! लूका की बात से कोई हैरानी नहीं होती, ''जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बान्धा'' (आयत 15ख)। पुराने और नये मित्रों द्वारा स्वागत होने पर मैं उसकी आंखों में आंसू देख सकता हूं।

कुछ देर बाद, रोम के लिए यात्रा फिर से आरम्भ हुई। कितना भव्य दृश्य होगा वह: सावधान रोमी सिपाही, उदास कैदी और मुस्कुराते हुए मसीही अप्पियुस मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे! ''और इस रीति से'' लूका लिखता है कि हम ''रोम को चले'' (आयत 14ग)।

धमकी की रुकावट के बिना (आयतें 14, 16)

लूका ने यह ध्यान दिलाते हुए यात्रा के वर्णन को संक्षिप्त किया कि, ''जब हम[18] रोम में पहुंचे,[19] तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने[20] की आज्ञा हुई'' (आयत 16)। साधारण कैद में रखने के बजाय, पौलुस को जकड़े हुए (आयत 20) ''भाड़े के घर में'' (आयत 30)[21] नज़रबन्द रखकर बारी-बारी से सैनिकों की निगरानी में रहने की अनुमति मिल गई थी।

पौलुस अन्ततः उस नगर में पहुंच गया जहां पहुंचने की उसकी बड़ी इच्छा थी। जब पौलुस को कारावास में ले जाया जा रहा था तो उसने नगर की गलियों में से गुजरते[22] क्या देखा और क्या सोचा होगा? सामान्य की भांति, लूका का वृत्तांत हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट नहीं करता है। पौलुस वहां एक पर्यटक के रूप में नहीं, बल्कि प्रभु के लिए एक गवाह के रूप में था (23:11)। परन्तु, आइए हम पौलुस के सामने आई प्राचीन नगरों की उस सबसे बड़ी और सबसे प्रशंसनीय चुनौती पर विचार करते हैं।

मैं अप्पियन मार्ग के टूटे-फूटे पत्थरों पर चलकर उस द्वार से होकर गया हूं जहां पौलुस ने प्रवेश किया होगा। मैंने हज़ारों मूर्तिपूजक मन्दिरों के खण्डहर देखे हैं जो उस समय नगर की शान रहे होंगे। मैंने मंच के भव्य खण्डहरों को देखा है जो नगर के व्यापारिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक केन्द्र थे। मैंने उस सुनहरे मील पत्थर को छू कर देखा है जो उस साम्राज्य के प्रत्येक भाग की दूरी को चिह्नित करता था। मैंने पलातीन पहाड़ी पर जहां नीरो का महल था, खड़े होकर देखा है।

लगभग दो हज़ार वर्ष बीत चुके हैं जब पौलुस को रोम में ले जाया गया था; परन्तु अपनी आंखें बन्द करें, और वह धनी और दुष्ट ''संसार की देवी'' पुनः जीवित हो जाती है। पौलुस के दिनों की भीड़ों अर्थात शक्तिशाली धनी लोगों का जो साम्राज्य को नियन्त्रित करते थे, आलसी निर्धनों का जो निःशुल्क भोजन के लिए पुकारते थे, व्यस्त दासों का जो आवश्यक सामान और सेवाएं उपलब्ध करवाते थे सजीव चित्र बनाएं। रोम में आकर सुसमाचार का प्रचार करने पर पौलुस और उसके साथियों को कितनी बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा होगा!

परन्तु, मनुष्यों के व्यवहारों पर शासन करने वाले परमेश्वर के लिए यह कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं थी। उसकी योजनाओं और उद्देश्यों में, राजनीतिक राज्य का केन्द्र एक ऐसा केन्द्र बन सकता था जहां से घनी आबादी के सभी क्षेत्रों में उसके राज्य का शुभ समाचार फैल सके। सभी सड़कें यदि रोम की ओर जाती थीं, तो वे रोम *से* ''पृथ्वी की छोर तक'' (1:8) भी जाती थीं।

फिर तो, ये शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण हैं ''और इस रीति से [हम] रोम को चले'' (28:14ख)! पौलुस की यात्रा, जो कई वर्ष पहले आरम्भ हुई थी, अन्ततः समाप्त होने को थी, और सुसमाचार प्रचार के लिए परमेश्वर के कार्यक्रम का एक नया चरण आरम्भ हो चुका था।

यहूदियों के नाम पौलुस के संदेश की अन्तिम बात (28:17-29)

कारावास की रुकावट के बिना (आयतें 17-23)

रोमियों के नाम पौलुस की पत्री में ज़ोर दिया गया है कि सुसमाचार प्रचार का उसका सामान्य ढंग ''पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए'' (रोमियों 1:16ग) था। किसी नये नगर में निरपवाद रूप से वह प्रचार की अपनी सेवकाई यहूदी आराधनालय से ही आरम्भ करता (प्रेरितों 17:1-3) था। रोम में यहूदियों की काफी ज्यादा जनसंख्या थी और कम से कम दस आराधनालय थे, परन्तु पौलुस के पास उनमें से किसी एक में जाने का विकल्प नहीं था। उसे कोई रुकावट नहीं थी अर्थात यदि वह उनके पास न जा पाता, तो वे उसे आने का निमन्त्रण दे देते।

कुछ देर विश्राम करने के बाद (और सम्भवतः नये सिरे से पहचान करवाने के बाद), पौलुस ने ''यहूदियों के बड़े लोगों को बुलाया'' (28:17क), जो आराधनालयों के प्राचीन, ग्रन्थी और प्रमुख यहूदी परिवारों के सरदार थे। वह जानना चाहता था कि जो घृणा यरूशलेम के यहूदियों में थी क्या वह उनमें भी है या नहीं। वह उन्हें पुनः आश्वासन देना चाहता था कि वह समस्या खड़ी करने के लिए नहीं आया था। सबसे महत्वपूर्ण बात, उसे उनमें से कुछ लोगों को यीशु मसीह के लिए जीतने की उम्मीद थी (रोमियों 9:1-5; 10:1)।

> और जब वे इकट्ठे हुए, तो उनसे कहा; हे भाइयो, मैंने अपने लोगों के या बापदादों के व्यवहारों के विरोध में कुछ भी नहीं किया,[23] तौभी बन्धुआ होकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। उन्होंने मुझे जांच कर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था। परन्तु जब यहूदी इस के विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दुहाई देनी पड़ी: न यह कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था। इसलिए मैंने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूं और बातचीत करूं; क्योंकि इस्राएल की आशा[24] के लिए मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूं[25] (प्रेरितों 28:17ख-20)।

पौलुस ने तीन सच्चाइयों का वर्णन किया: (1) उसने यहूदियों के विरुद्ध कुछ नहीं किया था; (2) रोमियों को उसके विरुद्ध कोई शिकायत नहीं थी; (3) उसे यहूदियों के विरुद्ध भी कोई शिकायत नहीं थी।

अपनी इस शृंखला के आरम्भ में, जहां तक सम्भव हो सके हमने *स्वयं* को देखने के लिए एक कहानी बताने के लिए 23:26-30 और 25:14-21 दो उदाहरण दिए थे। पौलुस का प्रवचन एक उदाहरण है कि किस प्रकार *दूसरों* को अच्छा दिखाने के लिए (और साख पाने के लिए) एक कहानी का सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है: (1) उसने अपने सुनने वालों में अपने आपको शामिल कर लिया। उसने ''हे भाइयो,'' ''अपने लोगो'' और ''अपने बाप-दादों'' कहा। (2) उसने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को बताते हुए अपनी भाषा को नरम कर दिया। उसने खूनी भीड़ से बचने को ''... रोमियों के हाथ सौंपा गया'' कह दिया। (3) उसने अपने श्रोताओं और जिन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया था, के बीच अन्तर किया। बुराई की बात करते हुए उसने, ''तुम यहूदियों'' के बजाय केवल ''यहूदियों'' कहा। (4) उसने अपने सुनने वालों को अपने मित्रभाव का आश्वासन दिया। उसने उनके विरुद्ध कोई आरोप नहीं लगाया था। उसने अपनी बात सुनने वालों को फिर से परिचय देकर समाप्त किया। सब यहूदियों को मालूम था कि ''इस्राएल की आशा'' के लिए सताए जाने का क्या अर्थ था।

यहूदी अगुओं के लिए विशेष दिलचस्पी का कारण पौलुस की वह बात थी कि उसने यहूदी जाति के विरुद्ध कानूनी आरोप नहीं लगाया था। एक दशक पूर्व, यहूदियों और मसीही लोगों में हुए झगड़ों के कारण, जिस समय रोम में सम्राट क्लौदियुस का शासन था सभी यहूदियों (और मसीही लोगों) को देश छोड़ना पड़ा था (18:2)। यहूदी उस मुश्किल घड़ी को फिर से नहीं दोहराना चाहते थे।

पौलुस को उनका उत्तर सावधानीपूर्वक परन्तु सही लगा था। वे कहने लगे, ''न हम ने तेरे विषय में यहूदियों से चिट्ठियां पाईं, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा'' (28:21)। हमें यह जानकर आश्चर्य होता है कि यरूशलेम से पौलुस के बारे में रोम में कोई संदेश नहीं भेजा गया था।[26] जहां तक हम जानते हैं, उन्होंने कोई संदेश नहीं भेजा था। शायद उन्हें इसकी परवाह नहीं थी, क्योंकि उन्हें मालूम था कि पौलसु के विरुद्ध उनका कोई उचित मुकदमा नहीं है। शायद वे यह जानकर प्रसन्न थे कि वह सैकड़ों मील दूर कैद में था, और (उनके विचार से) वह उनके उद्देश्य में कोई रुकावट नहीं बन सकता था। पौलुस के वहां से चले जाने से अन्य समस्याएं विशेषकर, फिलिस्तीन में रोमी शासन के विरुद्ध बढ़ती अराजकता उनका ध्यान आकर्षित करती होंगी।

यद्यपि रोमी नेताओं ने प्रेरित पौलुस के विरुद्ध कुछ गलत नहीं सुना था, परन्तु उस उद्देश्य के बारे में जिसे उसने अपना लिया था, उन्हें नकारात्मक खबरें मिली *थीं*। कुछ लोगों के विपरीत वे मामले की जांच करना चाह रहे थे। उन्होंने पौलुस को बताया, ''परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हर जगह इस

मत[27] के विरोध में लोग बातें कहते हैं''[28] (आयत 22)। उन्होंने मिलने के लिए ''एक दिन ठहराया'' (आयत 23क) और फिर चले गए।

ठुकराए जाने की रुकावट के बिना (आयतें 23-29)

उस दिन पौलुस का घर भरा हुआ था। ''बहुत लोग उसके यहां[29] इकट्ठे हुए'' (आयत 23ख)। वह कितना रोमांचित हुआ होगा! यहूदियों ने स्थिति पर चर्चा करने की उम्मीद की थी, परन्तु उसकी योजना इसे एक सुसमाचार सभा बनाने की थी। यीशु के वायदे के अनुसार पौलुस को रोम में अपनी गवाही देने का अवसर मिल गया होगा (23:11)!

राजा और उसके राज्य के बारे में बताते हुए *पौलुस आशा का संदेश* देने लगा। ''और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ,[30] और मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में (समझाता रहा)''[31] (28:23ग)। वह अपनी बात ''भोर से सांझ तक'' (28:23घ), अर्थात सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक कहता रहा।[32]

सामान्य की भांति कई लोगों ने पौलुस के संदेश को ग्रहण किया और कइयों ने नहीं: ''तब कितनों ने उन बातों को मान लिया,और कितनों ने प्रतीति न की'' (आयत 24)। विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच बहस हो गई अर्थात वे ''आपस में एकमत न हुए'' (आयत 25क)। दिन चढ़ने के साथ-साथ उनकी बहस भी गर्म होती गई (आयत 29)।

दिन ढलने के समय, पौलुस ने यशायाह से उद्धृत करते हुए, *न्याय की बात* कही:

> पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यवक्ता[33] के द्वारा तुम्हारे बापदादों से[34] अच्छा कहा, कि जाकर इन लोगों से कह कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा, और उन के कान भारी हो गए, और उन्होंने अपनी आंखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं (आयतें 25ग-27)।

(यशायाह 6:9, 10 से) भविष्यवक्ता की बातें परमेश्वर के वचन को तुच्छ जानने के ख़तरे के बारे में बताती हैं। यदि कोई आदमी परमेश्वर के संदेश को स्वीकार करने से इन्कार करता रहता है, तो एक समय आएगा जब वह इतना कठोर हो जाएगा कि वह इसे ग्रहण *नहीं कर पाएगा।*

यीशु ने अपने समय के कठोर मन यहूदियों पर ये बातें लागू की थीं। बाद में यीशु ने इन्हें उन यहूदियों पर लागू किया जिन्होंने उसे और उसके वचन को ठुकराया था (मत्ती 13:14, 15; मरकुस 4:12; लूका 8:10; यूहन्ना 12:40 भी देखिए)। इसके बाद पौलुस ने यह पद अपने साथी यहूदियों पर लागू किया था जो मसीह को स्वीकार करने को तैयार नहीं रखते थे (रोमियों 11:8)। प्रेरितों 28:26, 27 चौथी और अन्तिम बार है जहां इन शब्दों का प्रयोग हुआ है;[35] इस्राएलियों के कठोर मन ही इसका विषय रहे।

पहले, हमने सुझाव दिया था कि प्रेरितों 21-25 में पौलुस और सुसमाचार को यहूदियों

द्वारा ठुकराए जाने से यरूशलेम के पतन का आरम्भ हो गया जिसे 70 ईस्वी में रोमियों द्वारा नाश कर दिया गया था। कई लोग यह भी सोचते हैं कि प्रेरितों 28 अध्याय एक लोग के रूप में यहूदियों के ''निश्चयात्मक ठुकराए जाने को'' चिह्नित करता है कि यह ''यहूदी जाति को मिलने वाली अन्तिम गम्भीर चेतावनी'' थी।[36] शायद वे सही हों।[37]

यशायाह को उद्धृत करने के बाद, पौलुस ने कहा, ''सो तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे'' (आयत 28)। हो सकता है कि पौलुस केवल यह पुष्टि कर रहा हो कि अन्यजातियों के लोग यहूदियों की अपेक्षा वचन को अधिक ग्रहण करेंगे। ''इतिहास ... इस प्रेरित की मान्यता की ऐसी गवाही देता है जिसका विरोध नहीं हो सकता कि *उद्धार* के संदेश को *अन्यजातियों के लोग सुनेंगे।* ''[38]परन्तु, सम्भव है कि पौलुस की बातों का गहरा अर्थ हो अर्थात वह यह घोषणा कर रहा हो कि अब ''पहले यहूदियों के पास जाने का कर्त्तव्य'' उसका नहीं था।[39] यह ध्यान देने योग्य बात है कि पौलुस ने जेल में लिखी अपनी पत्रियों या बाद में किसी पत्री (1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस) में वाक्यांश ''पहले यहूदियों को'' का प्रयोग नहीं किया। हावर्ड मार्शल ने कहा, ''लूका [पौलुस को] कलीसिया के लिए एक अनुसरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहा होगा।'' आज, हमारे लिए आवश्यक नहीं है कि किसी नये समाज में जाने पर गैर यहूदियों में सुसमाचार ले जाने से पहले यहूदियों में प्रचार किया जाए।

आयत 28 में पौलुस द्वारा अन्यजातियों के उल्लेख से सभा का कार्य रुक गया। ''पौलुस के इस एक बात के कहने पर [वे] चले गए'' (आयत 25ख), यह एक बात न्याय की बात थी। कुछ अनुवादों में वैस्टर्न टैक्सट में पाया जाने वाला यह विचार शामिल है: ''और जब उसने ये बातें कहीं, तो यहूदी आपस में बड़ा झगड़ा करके वहां से चले गए।''

अन्य नगरों की तरह पौलुस और उसके संदेश को यहूदियों ने ठुकरा दिया था। परन्तु, इस बार, यहूदी न तो उसे नगर से बाहर कर सके और न ही पथराव करके मार सके (13:50; 14:5, 19), क्योंकि रोमी सरकार ने उसकी सुरक्षा की थी! काम करने के परमेश्वर के ढंग अद्‌भुत हैं।

सुसमाचार के सम्बन्ध में अन्तिम बात (28:30, 31)

ज़ंजीरों से न रोका गया (आयत 30)

लूका ने पौलुस के रोम में ठहरने के वृत्तांत को समेटते हुए, लिखा, ''और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा'' (आयत 30क)। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि पौलुस के मुकदमे की सुनवाई से पहले इतना समय क्यों निकल गया। शायद (जैसे पहले ध्यान दिया गया) उसके आरोपियों ने कोई खबर नहीं भेजी थी। शायद न्यायालय की सूची में उसका नाम बहुत पीछे था। कोई भी कारण हो, उस दौरान, पौलुस को ''अपने भाड़े के घर में''[40] रहने की अनुमति मिली थी, जिसका भाड़ा सम्भवत: रोम और अन्य स्थानों में रहने वाले मसीहियों ने अदा किया था।[41]

पौलुस को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त थे (आयत 30ख) परन्तु उसे अपने घर में

एक रोमी सिपाही के साथ दिन-रात बांधकर कारावास में रखा गया था (आयतें 16, 20; इफिसियों 6:20)। दिन सप्ताहों में, सप्ताह महीनों में, और महीने सालों में बदलने पर वह अवश्य ही गलियों में घूमने, मंच से प्रचार करने के लिए तरस रहा होगा। वह अवश्य ही हैरान होगा कि परमेश्वर ने उसे रोम में लाकर कैद क्यों कर रखा था। हम परमेश्वर के मन को नहीं जान सकते, परन्तु यहां कुछ सम्भव उद्देश्य दिए गए हैं जिन पर विचार किया जा सकता है:

(1) यदि पौलुस कारावास में न होता, तो शायद वह रोम में कम समय बिताता क्योंकि कलीसिया वहां पहले ही स्थापित हो चुकी थी और ''दूसरे की नेव पर घर'' (रोमियों 15:20ग) बनाना उसे अच्छा नहीं लगता था। उसकी योजना थोड़ी देर के लिए रोम को देखने और वहां से स्पेन (रोमियों 15:24) और अन्य स्थानों में जाने की थी।

(2) पौलुस की कैद बढ़ने के कारण ही सुसमाचार का प्रचार सम्राट के महल में हो पाया। पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया: ''... कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रकट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं'' (फिलिप्पियों 1:13)। पलटन सिपाहियों के एक विशिष्ट दल को कहा जाता था जिसे ''सम्राट की सुरक्षा तथा महल के न्यायालय में सुनवाई के लिए कैदियों को रखने के लिए'' रखा जाता था।[42] प्रत्येक चार से छह घण्टों के बाद, पौलुस के साथ बन्धे सिपाही की जगह दूसरे सिपाही को बान्धकर छुट्टी मिल जाती थी। इस प्रकार चौबीस घण्टों में, पौलुस के साथ चार से छह सिपाही बांधे जाते थे। दो वर्षों तक सैकड़ों सिपाहियों पर सुसमाचार को प्रकट किया गया था। प्रेरित द्वारा दूसरों को सिखाने के समय, अंगरक्षक के लिए सुनने के सिवाय कोई विकल्प नहीं होता था। फिर, जब पौलुस और सिपाही अकेले होते थे, तो मुझे नहीं लगता कि उनकी बातचीत मौसम या ओलम्पिक खेलों के बारे में होती होगी। दो साल के समय में, उन सिपाहियों में से कुछ मसीही बन गए होंगे। जब नौकरी के कारण उन्हें महल में जाना पड़ा तो वे अपने साथ सुसमाचार भी ले गए। शायद इसलिए पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया को लिख पाया, ''सब पवित्र लोग, *विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं* तुम को नमस्कार कहते हैं'' (फिलिप्पियों 4:22)। (अन्ततः, पौलुस को स्वयं नीरो के सामने अपना मुकदमा प्रस्तुत करने का अवसर मिल गया था [प्रेरितों 27:24]।)

(3) रोम में पौलुस की सेवकाई के दौरान कैद में होने के कारण पौलुस को राजा की ओर से सुरक्षा प्रदान की गई थी! पौलुस ने परमेश्वर की प्रबंध योजना को स्वीकार किया: ''मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है'' (फिलिप्पियों 1:12)।

रोमी अधिकारियों की रोक टोक के बिना (आयतें 30, 31)

कैद के दौरान, पौलुस को घर खुला रखने की अनुमति थी अर्थात ''जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा'' (आयत 31क) जिनमें यहूदी और अन्यजाति, मसीही और गैर मसीही सब थे। वह ''बिना रोक टोक निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु[43] की बातें सिखाता रहा'' (आयत 31ख)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''बिना रोक टोक'' निष्पक्षता, स्पष्टता और आत्मविश्वास से प्रचार करने को कहा गया है।[44]

मौखिक रूप से सिखाने के अलावा पौलुस ने अपना प्रभाव पुस्तक में लिखकर भी बढ़ाया। उसकी कई उत्कृष्ट पत्रियां इसी दौरान लिखी गईं:[45] इफिसियों की पत्री, जो मसीह और उसकी कलीसिया के बारे में बताती है; फिलिप्पियों की पत्री, फिलिप्पी में कलीसिया के नाम पौलुस का प्रेम पत्र; कुलुस्सियों की पत्री, जिसमें यीशु को महिमा देकर पौलुस के शब्दों में विधर्म से युद्ध किया गया; और फिलेमोन की पत्री, जो एक मित्र के नाम व्यक्तिगत पत्र है।[46] इन पत्रों से रोम में पौलुस के रहने के बारे में हमारा काफी ज्ञान बढ़ता है।

पौलुस के साथ लूका और तीमुथियुस जैसे पुराने मित्र थे।[47] यूहन्ना मरकुस का नाम उल्लेखनीय है, जिसका मेल इस प्रेरित से हो गया था।[48] अन्य कर्मियों में अरिस्तर्खुस,[49] इपफ्रुदितुस, तुखिकुस, यूसतुस, इपफ्रास और देमास शामिल हैं।[50] यकीनन ही राज्य के सभी भागों में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए और बहुत से लोगों को भेजा गया था।

जेल से लिखी पत्रियों से भी पता चलता है कि पौलुस को उन कलीसियाओं की चिन्ता थी जिन्हें स्थापित करने में उसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया था (देखिए फिलिप्पियों 4:1)[51] और उसने उनसे सम्पर्क बनाए रखने की कोशिश की। कुछ मण्डलियों ने रोम में अपने प्रतिनिधि भेजे (देखिए फिलिप्पियों 4:18)। अपने हालात की जानकारी देने और उनकी आत्मिक आवश्यकताएं जानने के लिए पौलुस ने भी कलीसियाओं में संदेशवाहक भेजे।[52]

शायद सबसे बड़ी दिलचस्पी पौलुस की मानसिक स्थिति को बताती पत्रों की गहराई है। उसने ''परिश्रमों,'' ''क्लेशों,'' और बड़े ''संघर्ष'' के बारे में बताया (फिलिप्पियों 1:30; कुलुस्सियों 1:24; 2:1)। वह उम्र के प्रभावों और लगातार बढ़ती उम्र को महसूस कर रहा था (फिलेमोन 9)। उसकी विशेष चिन्ता रोम में उसके भाइयों के लिए थी जो ''... डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते [थे] ... यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करें'' (फिलिप्पियों 1:15, 17)। इतनी समस्याओं के बावजूद भी पौलुस का व्यवहार सकारात्मक था: ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13; देखिए कुलुस्सियों 1:29)।[53] भविष्य में उसके साथ कुछ भी हो अर्थात वह छूटता या मर जाता, इस सबकी चिंता किए बिना वह तैयार था (फिलिप्पियों 1:19–24, 27; 2:17)।[54]

पौलुस की दिलचस्पी सुसमाचार को फैलाने में ही थी। उसने प्रार्थना करने के लिए कहा ''कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, ... और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है'' (कुलुस्सियों 4:3, 4)।[55] उसने आनन्द से लिखा:

> हे भाइयो, मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं। और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं (फिलिप्पियों 1:12–14)।

परमेश्वर ने प्रार्थनाओं का उत्तर देकर पौलुस के प्रयासों को आशीष दी। पलटन के सिपाहियों पर पड़े प्रभाव और कैसर के घराने के कुछ लोगों के मनपरिवर्तन के अलावा (फिलिप्पियों 1:13; 4:22), रोम में हम एक और असाधारण मन परिवर्तन के बारे में जानते हैं अर्थात भगौड़ा बन चुके उनेसिमुस नामक एक गुलाम को, जो राजधानी नगर में भाग आया था और किसी प्रकार पौलुस के सम्पर्क में आ गया था (फिलेमोन 10-21)। इसमें कोई संदेह नहीं कि रोम और आसपास के क्षेत्रों में और भी बहुत से लोग बचाए गए थे क्योंकि पौलुस ''बिना रोक टोक बहुत निडर होकर ... प्रभु यीशु मसीह की बातें'' सिखा सका था (प्रेरितों 28:31)।

इससे हम लूका की उस ''अन्तिम बात'' पर आते हैं, जो मूलत: उसने प्रेरितों के काम में लिखी थी। वह अंतिम अर्थात सबसे महत्वपूर्ण बात है ''*बिना रोक टोक* बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार ... और प्रभु यीशु मसीह की बातें'' (आयत 31ख)। पौलुस के हाथ बन्धे हुए थे, परन्तु उसकी जीभ स्वतन्त्र थी। वह स्वतन्त्र रूप से इधर-उधर नहीं जा सकता था, परन्तु सुसमाचार तो जा सकता था। कैदी वह था, वचन नहीं (2 तीमुथियुस 2:9)।

सारे संसार में सुसमाचार के फैलने की सम्भावना के साथ विजय घोष की यह टिप्पणी देकर लूका ने अपनी कलम रख दी।

सारांश

इस पाठ का शीर्षक, ''अन्तिम बात,'' प्रेरितों के काम की पुस्तक की अन्तिम बात के लिए ही है। नवम्बर 10, 1942 को विंस्टन चर्चिल ने एक उदास सभा को सम्बोधित किया। कई दिनों से, हिटलर की वायु सेना लंदन पर बमबारी कर रही थी। मोर्चाबन्दी किए हुए लोगों में आशा जगाने के लिए यह ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्या कह सकता था? धीरे-धीरे, वह इन शब्दों में गुर्राया था: ''यह अन्त नहीं है। अन्त का आरम्भ भी नहीं है यह। लेकिन शायद, यह, आरम्भ का अन्त है।'' हम उसके शब्दों की नकल कर सकते हैं: प्रेरितों 28 अध्याय सुसमाचार के फैलने की अन्तिम बात नहीं है; यह तो केवल शुभ समाचार के फैलने के *आरम्भ* की अन्तिम बात है। इस शृंखला के अपने अगले पाठ में, हम उस रोमांच पर ध्यान देंगे जो लूका के *अपनी* अन्तिम बात कहने के बाद भी जारी रहता है।

अन्त में, मैं चकित हुए बिना नहीं रह सकता: सुसमाचार के बारे में हमारे अपने जीवनों में ''अन्तिम बात'' क्या होगी? क्या हमने सारे संसार में सुसमाचार के फैलाव के लिए अपना निजी योगदान दिया है? क्या हमने पौलुस की तरह अपने पड़ोसियों तक सुसमाचार फैलाने के लिए योगदान दिया है? कितने दुख की बात है अगर अन्तिम बात यही हो कि ''उसने केवल अपने बारे में ही सोचा; उसे केवल अपनी ही चिन्ता थी; वह केवल अपने लिए ही जीया।'' ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)।[56]

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरितों के काम में आयत 31 लूका की अन्तिम प्रोग्रेस स्टेटमेन्ट अर्थात प्रगति की बात है। हो सकता है कि सब बातों को संक्षिप्त करने की इच्छा की गई हो क्योंकि इससे पहले प्रोग्रेस स्टेटमेन्ट अर्थात प्रगति की बात 19:20 में ही मिलती है। निश्चय ही यह अध्याय 28 की घटनाओं को संक्षिप्त कर देती है। [2]भूमध्य सागर पर यात्रा करना मार्च तक बहाल नहीं हुआ, परन्तु हवा के अनुकूल होने पर फरवरी के आरम्भ में किनारे-किनारे (एक या दो दिन की यात्रा करने के लिए) जाया जा सकता था। [3]कांस्टिलेशन जेमिनी (जुड़वां) का नाम काल्पनिक दंतकथा भाइयों के लिए लिया जाता है। [4]इस प्रकार के अंधविश्वासों पर आत्मा की प्रेरणा से दी गई टिप्पणी के लिए, देखिए 1 कुरिन्थियों 8:4-6. [5]लूका (और सम्भवत: अरिस्तर्खुस) सूबेदार, उसके सिपाहियों और अन्य कैदियों के साथ जहाज पर ही होगा। [6]पृष्ठ 21 पर मानचित्र देखिए। [7]रेगियुम के निकट दंत कथा के करिब्दिस का भंवर और सिला की चट्टान थी। यूनानी काल्पनिक दंतकथा में करिब्दिस और सिला समुद्री राक्षस थे जो नाविकों को खा जाते थे। [8]''वहां से घूमकर'' का संकेत सम्भवत: यह है कि नाविकों की चतुराई इसी बात से पता चलती थी कि वे उस स्थान से होकर आएं। [9]बर्नार्ड आर. यंगमैन, *बैकग्राउंड टू द बाइबल,* बुक 4, *स्प्रैडिंग द गॉस्पल* / पोम्पई 79 ई. में वेस्युवियुस से आए ज्वालामुखी और राख के नीचे दब गया था। [10]पौलुस के ''शरीर में कांटा'' फैल भी गया होगा, जिससे वह कमज़ोर और निराश हो गया था।

[11]त्रोआस में भी ऐसा ही हुआ था। ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 152-155 पर प्रेरितों 20:6, 7 पर नोट्स देखिए। [12]दूसरे सिपाही भी मसीही बन गए, जिनमें कुरनेलियुस (प्रेरितों 10) और राज्य की पलटन के कुछ और लोग शामिल हैं (फिलिप्पियों 1:13)। [13]अप्पियन मार्ग अप्पियुस क्लौदियुस कैसस के नाम पर रखा गया था, जिसने 312 ई.पू. में काम आरम्भ करवाकर सड़क के भाग के लिए स्वयं खर्चा किया था। अप्पियुस ''सैन्सर'' नाम से प्रसिद्ध एक महत्वपूर्ण रोमी अधिकारी था जो जनगणना और लोगों के व्यवहार तथा नैतिकताओं का ध्यान रखने के लिए ज़िम्मेदार दो लोगों में से एक था। [14]यूनानी शास्त्र में ''Appii forum'' (देखिए KJV) है। अधिकतर नगरों में व्यापार चलाने के लिए फोरम एक मुख्य स्थान होता था; इसलिए इसे ''चौक'' भी कहा जा सकता था। [15]उन दिनों सराय आज के होटलों की तरह ही होंगी (अर्थात, इसमें रात बिताने के लिए कमरे होते थे)। [16]कुछ लोग तीस मील के बाद रुक क्यों गए, जबकि दूसरे लोग और दस मील चले? एक प्रचारक ने मज़ाक में सुझाव दिया कि *जवान* मसीही तैन्तालीस मील चले, जबकि *बूढ़े* मसीही तैन्तीस मील के बाद थक गए। शायद यह पहले से बनाई गई योजना थी ताकि पौलुस को दोहरा आदर मिले। [17]एफ. एफ. ब्रूस, *द बुक ऑफ ऐक्ट्स,* rev. ed., *द न्यू इन्टरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट* / [18]प्रेरितों के काम की आयतों में यहां ''हम'' शब्द अन्तिम बार है। [19]वैस्टर्न टैक्सट में है ''जब हम रोम में पहुंचे, तो सूबेदार ने कैदियों को रखवालों के कप्तान को सौंप दिया।'' इसमें पौलुस को छोड़कर दूसरे कैदी होंगे, क्योंकि लूका यह कहते हुए कि पौलुस को वहां रहने दिया गया, आगे जारी रखता है। [20]''अकेले'' से संकेत मिलता है कि वह अपने साथ रोम से आने वाले दूसरे कैदियों के साथ नहीं रहा। इससे यह भी संकेत मिलता है कि लूका, अरिस्तर्खुस तथा दूसरे मसीहियों को उसके कमरे में नहीं रहने दिया गया, बेशक वे उसे मिलने जा सकते थे।

[21]पौलुस के साथ विशेष व्यवहार से संकेत मिलता है कि फेस्तुस की रिपोर्ट उसके पक्ष में थी। हम नहीं जानते कि वह लिखित रिपोर्ट जहाज़ के डूबने पर बच गई थी या नहीं; परन्तु न भी बची हो, तो भी यूलियुस ने उसमें लिखी बातें बता ही दी होंगी। सम्भवत: सूबेदार ने भी पौलुस के पक्ष में अपनी टिप्पणियां जोड़ दीं। [22]रोम में मैंने पौलुस का पारम्परिक कमरा देखा था, परन्तु हम कह नहीं सकते कि यह वास्तव में कहां था। [23]पौलुस के विरुद्ध बार-बार लगाए गए आरोपों में से दो ये थे। यदि उन्होंने उसे सुना हो तो उसने इन आरोपों से इन्कार किया था। [24]''इस्राएल की आशा'' मुख्यत: मसीह के आने और इस्राएल जाति के फिर से बहाल होने को कहा जाता था। परन्तु, जैसे कि हम अपनी शृंखला में देख चुके हैं, इस आशा में मुर्दों का जी उठना भी शामिल था। पौलुस ज़ोर देकर कहता रहा कि वह मुर्दों के जी उठने में अपने विश्वास के

कारण बन्दी हुआ था (देखिए 23:6; 26:6, 7)। [25]पौलुस ने सम्भवत: अपनी कलाई से लटकी ज़ंजीर पर ज़ोर देने के लिए हाथ ऊपर उठाया। [26]कई लोगों का सुझाव है कि यरूशलेम से रोम तक वचन के पहुंचने के लिए काफ़ी समय नहीं था, परन्तु स्पष्टत: रोम में यहूदी अगुओं को लगा कि यदि यरूशलेम में उनके साथी यहूदी उनसे सम्पर्क करना चाहते थे तो अब काफ़ी समय निकल गया था। [27]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''पौलुस पर मुकदमा'' में प्रेरितों 24:5, 14 पर नोट्स देखिए। [28]सच्ची मसीहियत के साथ ऐसा ही होता है। शैतान यह बात सुनिश्चित कर ही लेगा कि नये नियम की मसीहियत ''के विरोध में लोग बातें'' करते रहें। [29]कई लोगों का मत है कि ''उसके यहां'' का अर्थ आयत 30 के ''घर'' की तरह नहीं है। मुझे कोई संदेह नहीं लगता कि वे दोनों एक ही स्थान हैं। हों या न हों इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। [30]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 31 पर प्रेरितों 1:3 पर नोट्स देखिए।

[31]देखिए प्ररितों 17:1-3. [32]इस दौरान, लोग आ जा रहे होंगे। [33]यशायाह की पुस्तक के आत्मा की प्रेरणा से होने का यह एक मजबूत पद है। [34]आयत 17 में पौलुस ने ''*अपने* बाप-दादों'' कहकर अपना परिचय यहूदी अगुओं के साथ दिया। परन्तु जब उन्होंने यीशु के विषय में उसके संदेश को ठुकराया, तो उसने ''*तुम्हारे* बाप दादों'' कहकर उनसे दूरी बना ली। [35]यूहन्ना 12:40 बाद में लिखा गया था, परन्तु यूहन्ना मत्ती 13, मरकुस 4, और लूका 8 में यीशु द्वारा बनाई गई प्रासंगिकता ही बना रहा था। [36]रिक एचले, ''द स्टोरी दैट नैवर एण्ड्स,'' 3 मई 1987 को सदर्न हिल्ज़ चर्च ऑफ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सास में दिया गया प्रवचन। [37]लूका ने रोम में पौलुस के दो वर्षों तक रहने को बताने के लिए सोलह आयतें लीं। उन सब को छोड़ केवल तीन आयतें ही यहूदियों द्वारा सुसमाचार के ठुकराने को बताती हैं। लूका ने जगह नहीं भरी, सो घटना अवश्य ही महत्वपूर्ण होगी। इसका उद्देश्य भी यही लगता है। [38]रिचर्ड ओस्टर, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैन्ट्री सीरीज़। [39]आई. हांवर्ड मार्शल, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द टिण्डेल न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्री सीरीज़, ed. R.V.G. Tasker. [40]रोम में रहने के दौरान पौलुस की सुरक्षा और खाने पीने की ज़िम्मेदारी रोम की थी। सम्भव है कि उसने भाड़े पर मकान इसलिए लिया हो ताकि वह स्वतन्त्रता से काम कर सके। सरकारी भण्डार ''फ्री'' होने के साथ कुछ शर्तें भी जुड़ी होती हैं।

[41]इस समय के दौरान आर्थिक सहायता फिलिप्पी से आई (फिलिप्पियों 2:25; 4:10-14, 18)। कई लोग यह भी अनुमान लगाते हैं कि पौलुस को इसी समय के आस पास मीरास मिली हो सकती है। कई तो यह भी सोचते हैं कि पौलुस तम्बू बनाकर अपना गुज़ारा करता था, परन्तु ऐसा लगता नहीं है। [42]जे. डब्ल्यू मैक्गार्वे, *न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ अपोस्टल्ज़,* vol. 2. [43]''प्रभु यीशु'' के शीर्षक में हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता से सम्बन्धित सभी अद्भुत सच्चाइयां लिपटी हुई हैं। [44]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसिज ऑफ ऐक्ट्स* से उद्धृत। [45]इन सभी पत्रों ने पौलुस के कैदी होने की बात की (इफिसियों 3:1; 4:1; फिलिप्पियों 1:13; कुलुस्सियों 4:3, 18; फिलेमोन 1, 9, 13)। इन पत्रों में बहुत से सम्बन्ध हैं (जो लोग पौलुस के साथ थे, उन्हीं लोगों ने पत्र आगे दिए, आदि), जो हमें यह निष्कर्ष निकालने को बाध्य करते हैं कि वे सभी एक ही जगह से एक ही समय लिखे गए। उनमें से एक में, पौलुस ने ''कैसर का घराना'' (फिलिप्पियों 4:22; 1:13 भी देखिए) का उल्लेख किया। इसलिए बहुत से लोगों का मानना है कि वे पौलुस की पहली कैद के दौरान रोम से ही लिखे गए थे। कई लोग यह भी मानते हैं कि पौलुस इब्रानियों की पत्री का लेखक था, जो इस दौरान ही लिखी गई हो सकती है (देखिए इब्रानियों 13:19, 23, 24)। इब्रानियों की पृष्ठभूमि के लिए *ट्रुथ फॉर टुडे* के अंग्रेज़ी संस्करण के ''ए सर्वे ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट'' (जुलाई 1993) का अंक देखिए। [46]इन चार पत्रियों पर अधिक जानकारी के लिए, फिर से ''ए सर्वे ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट'' देखिए। [47]देखिए फिलिप्पियों 1:1; 2:19-23; कुलुस्सियों 1:1; 4:14; फिलेमोन 24. [48]देखिए कुलुस्सियों 4:10; फिलेमोन 24; प्रेरितों 13:13; 15:36-40; 2 तीमुथियुस 4:11. [49]अरिस्तर्खुस पौलुस के साथ रोम में गया था। [50]देखिए इफिसियों 6:21; फिलिप्पियों 2:25; कुलुस्सियों 1:7; 4:7, 10, 11-14; फिलेमोन 23, 24. देमास के सम्बन्ध में, देखिए 2 तीमुथियुस 4:10.

[51]इसमें कुलुस्से और लौदिकिया जैसी कलीसियाएं शामिल थीं जो सम्भवत: इफिसुस में उसके काम

के फलस्वरूप स्थापित हुई थीं, बेशक उसने उन नगरों में व्यक्तिगत रूप से प्रचार नहीं किया था (कुलुस्सियों 1:7, 8; 2:1; 4:16)। [52]देखिए इफिसियों 6:21; फिलिप्पियों 2:19, 23, 25-30; कुलुस्सियों 4:7, 8, 10. [53]फिलिप्पियों 3; 4 ''सकारात्मक सोच की शक्ति'' पर मूल ''शास्त्र'' है। [54]उसे छूट जाने की आशा थी (फिलिप्पियों 1:25, 26; 2:24; फिलेमोन 22), परन्तु यह छूटना उसके लिए व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं था। [55]वह विशेष रूप से नीरो के पास प्रचार करने के अवसर की बात पर विचार कर रहा था। [56]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो सुनने वालों को इसे ''अन्तिम वचन'' बनाने के लिए जो भी करने की आवश्यकता हो उसे करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए: ''वह परमेश्वर और मनुष्य से प्रेम करता था, सो उसने दूसरों की सेवा के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानी!''

अपने कारावास के सम्बन्ध में पौलुस का व्यवहार

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्तिम भाग का अध्ययन करते हुए मैं पौलुस द्वारा अपने कारावास के कारण (या कारणों) के बारे में उन शब्दों के इस्तेमाल से आकर्षित हुआ जो सभा में, उसने ज़ोर देकर कहे थे, ''कि मरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे साम्हने मुकदमा हो रहा है'' (प्रेरितों 23:6; 24:21)। राजा अग्रिप्पा के सामने उसने कहा, ''उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बाप दादों से की थी मुझ पर मुकदमा चल रहा है'' (26:6)। रोम में पहुंचकर उसने यहूदी अगुओं को बताया, ''इस्राएल की आशा के लिए मैं इस ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हूं'' (28:20)।

जेल से अपनी पत्रियां लिखते समय उसने घोषणा की कि वह ''... अन्यजातियों के लिए मसीह का बन्धुआ'' (इफिसियों 3:1) और ''प्रभु में बन्धुआ'' (इफिसियों 4:1) था। उसने ''मैं मसीह के लिए कैद हूं'' (फिलिप्पियों 1:13), ''उन दुखों ... जो तुम्हारे लिए उठाता हूं'' (कुलुस्सियों 1:24), और ''मसीह के उस भेद[1] ... जिसके कारण मैं कैद में हूं'' (कुलुस्सियों 4:3) की बात की। फिलेमोन के नाम अपने पत्र में उसने फिर ''मसीह यीशु का कैदी'' होने (फिलेमोन 1, 9) और ''इस कैद में जो सुसमाचार के कारण है'' (फिलेमोन 13) की बात की।

पौलुस ने अपने बन्धनों को ''न्याय की असफलता'' या ''प्रभु की ओर से वह दण्ड'' नहीं माना जो उसे मिलना नहीं चाहिए था। बल्कि, उसने इन्हें परमेश्वर की महानतम योजनाओं तथा उद्देश्यों के भाग के रूप में देखा जिन्हें किसी न किसी प्रकार सुसमाचार को फैलाने, मसीह में उसे दृढ़ करने में सहायता करने और प्रभु की महिमा के लिए तैयार किया गया था।

अगली बार जब आप अपने आपको ऐसी परिस्थिति में ''कैद'' महसूस करें जिससे निकलना हो या ऐसी समस्याओं में ''बन्धा हुआ'' पाएं जो सुलझने वाली न हों, तो यह विचार आपको यह सोचने में सहायता करेगा कि आप परिस्थितियों के शिकार नहीं, बल्कि ''प्रभु के [और लिए] कैदी'' हैं। क्या पता? पौलुस की तरह परमेश्वर के पास आपकी इस दुविधा का भी उद्देश्य हो सकता है (रोमियों 8:28)!

पाद टिप्पणियां

[1] ''मसीह का भेद'' मसीह के बारे में पुराने नियम की शिक्षा को कहा गया है जिसे मनुष्यों को पूरी तरह तब तक समझ नहीं आई जब तक अन्त में पौलुस और आत्मा की प्रेरणा प्राप्त अन्य लोगों पर यह प्रकट नहीं किया गया (इफिसियों 3:3-5)।

कैसर का घराना

1. यूलियस, 49-44 ई. पू.
   क. 78 ई. पू. से पोम्पे और क्रेसस के साथ त्रिशासकत्व का भाग।
   ख. बड़ी सैनिक सफलता के बाद रोम में लौटा। त्रिशासकत्व का नेता बना।
   ग. 44 ई. पू. में यूलियस की शक्तिसंग्रह से गणतन्त्र को बचाने के प्रयास में ब्रुटुस और कैसियस द्वारा हत्या।
   घ. उसकी मृत्यु के चार माह बाद, उसके सम्मान में रखी गई खेलों में एक पुच्छल तारा दिखाई दिया। यह समझकर कि वह देवता बन गया है, लोग उसे ''दैवीय जूलियस'' कहने लगे।
2. अगस्तुस (ओक्टेवियन), 31 ई. पू.-14 ई.
   क. 31 ई. पू. में ऐक्टियुम के युद्ध में आधिपत्य मिलने तक ऐन्टनी और लेपिदुस के साथ त्रिशासकत्व में।
   ख. यूलियस का लेपालक पुत्र।
   ग. इसने सीनेट को शक्ति लौटाने की कोशिश की। अपने मित्रों के अनुरोध पर स्वयं को अगस्तुस (सामान्यत: यह पद देवताओं के लिए सुरक्षित था) कहने लगा। सम्राटों द्वारा अपने आपको दैवीय कहलाने के विचार का आरम्भ इसी ने किया। 27 ई. पू. से, वह अपने आपको सम्राट कहने लगा, जो साम्राज्य (तब तक एक गणराज्य) के आरम्भ का प्रतीक था।
   घ. आम तौर पर इसे एक न्यायप्रिय शासक, अच्छा प्रबन्धक और कूटनीतिक माना जाता था। 14 ईस्वी में 76 वर्ष की आयु में इसका देहांत हो गया था।
3. तिब्रियुस, 14-37 ईस्वी।
   क. अगस्तुस का पुत्र। इसमें अपने पिता वाली नेतृत्व की योग्यताओं की कमी थी।
   ख. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले तथा यीशु के समय सत्ता में। इसने पीलातुस को यहूदिया का अधिकारी बनाया। माना जाता है कि यह यीशु की मृत्यु और ''कथित'' पुनरुत्थान की पीलातुस की रिपोर्ट से इतना परेशान हुआ कि उसने उसे सीनेट में उसे आधिकारिक रोम देवता बनाने और सर्वदेव मन्दिर में शामिल करने के लिए कानून बनाने का प्रस्ताव रखा।
   ग. बाद के एक सम्राट, सिवरुस (222 ईस्वी) का, एक सर्वदेव मन्दिर था जिसमें इब्राहीम और मसीह की ऊपर के धड़ की प्रतिमाएं थीं।

4. कलीगुला, 37–41 ईस्वी।
   क. तिब्रियुस का पागल भतीजा। इसने अपने देवता होने की बात पर ज़ोर दिया। अपने घोड़े को मन्त्रिमण्डल का सदस्य बनाया। यहूदियों को मजबूर करने की कोशिश की कि वे यरूशलेम के मन्दिर में उसकी मूर्ति लगाएं।
   ख. अपने ही अंगरक्षकों ने उसकी हत्या कर दी थी।
5. क्लौदियुस, 41–54 ईस्वी।
   क. कलीगुला का अंकल। न्यायप्रिय शासक बनने की कोशिश की। हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम का बचपन का साथी; उसे यहूदिया और सामरिया का राज्यपाल बनाया गया था।
   ख. 49 ईस्वी में यहूदियों को रोम से निकाल दिया गया। सिटोनियुस ने कहा कि यहूदियों में भड़के दंगों के कारण उनका निकाला जाना किसी ''ख्रेस्तुस'' के बहकावे पर था।
   ग. इसकी चौथी पत्नी अग्रिप्पिना ने इसे विष दे दिया, जो अपने पुत्र नीरो (क्लौदियुस का लेपालक) को सम्राट बनाना चाहती थी।
6. नीरो, 54–68 ईस्वी।
   क. सौतेले पिता की हत्या के समय केवल सत्रह वर्ष का था। वास्तविक शक्ति उसके शिक्षक, स्पेन के सिनिका जैसे सलाहकारों के हाथों में थी। अखया के हाकिम, गल्लियो का छोटा भाई। आरम्भिक वर्षों के दौरान उसने बड़ा अच्छा शासन किया।
   ख. बाद में एक पागल निर्दयी शासक बन गया। अपनी मां को विष दे दिया; अपनी गर्भवती पत्नी ओक्टेविया को लात मारकर मार दिया; सिनिका को आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया; पुरुषों यहां तक कि उच्च अधिकारियों से भी अश्लील नाटक करवाए, जिनमें कभी-कभी वह स्वयं भी भाग लेता था; अपने रथ को सर्कस में दौड़ाया।
   ग. 64 ईस्वी में रोम को जला दिया। दोबारा बनाकर इसे ''नीरोपुलिस'' नाम देने की योजना थी। आग लगाने का आरोप मसीहियों पर लगाकर उन्हें सताने लगा। 68 ईस्वी में आत्महत्या कर ली।
7. विस्पेसियन, 69–79 ईस्वी।
   क. सेना में एक सफल सेनापति। एक साल पहले हुई नीरो की मृत्यु के बाद 69ई. में यरूशलेम में विद्रोह करने वाले यहूदियों के विरुद्ध युद्ध में अगुआई करते हुए उसे चौथा सम्राट बनाने के लिए बुला लिया गया। अपने पुत्र तीतुस को घेराबन्दी का काम सौंप दिया।
   ख. तिब्रियुस के शासन के समय से आई गिरावट के बाद रोम का पुनर्निर्माण करवाया। निर्माण में कुलोसियुम और आर्क ऑफ़ तीतुस शामिल था।

8. तीतुस, 79-81 ईस्वी।
   क. 70 ईस्वी में यरूशलेम की किलाबन्दी करने में यहूदियों पर अगुआई की। रोम में आर्च ऑफ़ तीतुस पर विजय का स्मरणोत्सव मनाया।
9. डोमिशियन, 81-96 ईस्वी।
   क. तीतुस का एक छोटा भाई।
   ख. एक निर्दयी तानाशाह जो अपने आपको देवता कहता था। इसने यहूदियों, मसीहियों और अपने ही परिवार के लोगों की हत्या की।